पुस्तक समीक्षा

समीक्षक : डॉ. विमल कुमार लहरी, सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पुस्तक : भारतीय सामाजिक संस्थाओं पर वैश्विकरण का प्रभाव
सम्पादक : डॉ. आलोक कुमार कश्यप, उपाचार्य, समाजशास्त्र विभाग
महाराजा बलवंत सिंह पी.जी. कॉलेज, वाराणसी
प्रकाशक : अर्पण पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
वर्ष : 2017
कुल पृष्ठ : 290
मूल्य : 1095

देखा जाय तो मानव सभ्यता का शुरूआती दौर सामाजिक संस्थाओं से दूर था। अर्थात् मानव विवाह, परिवार एवं नातेदारी जैसी संस्थाओं में बंधा नहीं था। कंदराओं, गुफाओं में एवं पहाड़ों पर जीवन व्यतीत करता था। पशुवत समान जीवन था। कालक्रम में मानव मस्तिष्क जैसे–जैसे विकसित होता गया, वैसे–वैसे वह सभ्यता के पायदानों को पार करता गया। जिसकी चर्चा ऑगस्ट कॉम्ट मार्गन एवं अन्य समाज वैज्ञानिकों की रचनाओं में देखा जा सकता है। मानव मस्तिष्क विकसित होने के कारण मानव समूहों में रहना प्रारम्भ किया और यहीं से सामाजिक संस्थाओं के निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है।

संस्था निर्माण की प्रक्रिया के संदर्भ में हम देखें तो संस्थाओं का निर्माण विचारों के क्रियान्वयन की एक लम्बी प्रक्रिया, लम्बी अवधि एवं जटिलताओं के बाद होता है। इस तरह देखा जाय तो मानव विकास की प्रक्रिया भी काफी जटिल रही है। आज मानव इस पायदान पर पहुंच चुका है, जहाँ वह संस्थाओं से अछूता नहीं है। अर्थात् मानव की स्थिति ऐसी हो चुकी है कि वह संस्थाओं से अलग होकर जीवन जी ही नहीं सकता। आज मानव समाज को सर्वशक्तिमान मानता है। आज मानव इन्हीं संस्थाओं में बंधकर अपने जीवन को गतिमान किये हुए है। विश्व का कोई ऐसा देश नहीं है जो संस्था रहित है।

सामाजिक संस्थाओं के कारण ही मानव **'सामाजिक प्राणी'** कहलाता है। संस्थाएं मानव के समाजीकरण में एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप में उत्तरदायी होती हैं। संस्थायें नहीं होती तो मानव पशुवत समान होता। अर्थात् सामाजिक संस्थाएं ही **'मानव को मानव'** बनाये हुए हैं। लेकिन हम इधर कुछ दशकों से देखें तो भारतीय सामाजिक संस्थाओं में दरार पड़ती दिख रही है, जिससे संस्थाओं में टूटन उत्पन्न हुई हैं। इस टूटन के कारणों को हम देखें तो ढेर सारी प्रक्रियाएं उत्तरदायी हैं, जिनमें आधुनिकीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति एवं वैश्वीकरण हैं। यदि इसका गहराई से मूल्यांकन किया जाय तो वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो समस्त जनमानस को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है। इन्हीं प्रभावों को देखने के प्रयास का परिणाम प्रस्तुत पुस्तक है।

प्रस्तुत पुस्तक को डॉ. आलोक कश्यप द्वारा संपादित किया गया है, जिसमें कुल 34 शोध–पत्रों/लेखों को लिपिबद्ध किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में मुख्यतः यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि वैश्वीकरण ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित किया गया है। भारतीय सामाजिक संस्थाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव के रूप में जिन पक्षों को विविध शोध–पत्रों/लेखों के माध्यम से लिपिबद्ध किया गया है, उसमें वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव, वैश्वीकरण का विवाह, परिवार एवं नातेदारी पर प्रभाव, जनजातीय जीवन एवं अस्मिता पर प्रभाव, महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभाव, धर्म एवं राजनीति पर प्रभाव, मानवाधिकार पर प्रभाव, दलित एवं पिछड़े जनमानस पर प्रभाव के साथ–साथ वैश्विकरण के प्रभाव स्वरूप उत्पन्न परिवर्तनों को भी रेखांकित करने का प्रयास पुस्तक का उपादेय एवं गंभीर पक्ष है।

उपर्युक्त समस्त प्रभावों को रेखांकित करने वाले शोध–पत्रों/लेखों के सार के रूप में हम देखें तो स्पष्ट होता है कि वैश्विकरण की प्रक्रिया ने जनमानस के प्रत्येक पक्षों को प्रभावित किया है।

भारत ही नहीं, वरन् वैश्विक स्तर पर हम देखें तो संयुक्त परिवारों की विकास यात्रा आज एकाकी परिवार के मुहान तक पहुंच चुकी है। इस विकास यात्रा में वैश्वीकरण जैसी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संयुक्त परिवार टूटने के कारण सामाजिक शक्ति कमजोर होती दिख रही है। मानव अपने को आज अकेला महसूस कर रहा है। जिससे बड़े स्तर पर जनमानस के बीच तनाव, अवसाद एवं अलगाववाद की वैचारिकी बढ़ी है। इसके अतिरिक्त देखें तो वैश्विकरण को दोधारी तलवार की संज्ञा प्राप्त है। अर्थात् यदि इसके फायदे हैं तो इसके नुकसान भी हैं। विभिन्न आंकड़े बताते हैं कि वैश्विकरण की प्रक्रिया के बाद आर्थिक विकास दर में बड़े स्तर पर वृद्धि हुई है, परन्तु इससे अमीरी एवं गरीबी की खाईं भी बड़े स्तर पर बढ़ी है अर्थात् जहाँ एक तरफ अमीर और अमीर होता गया, वहीं गरीब और गरीब होता गया। आज हम विकास का ढ़िंढोरा पीट रहे हैं लेकिन भारत का प्रत्येक तीसरा व्यक्ति भीषण दरिद्रता की हालत में जीवन जीने को मजबूर है। इस तरह आज उपभोक्तावादी संस्कृति ने गरीबों को बड़े सपने तो दिखाये हैं लेकिन वे सपने शायद सपने ही रह गये गरीबों के लिए।

वैश्विकरण ने जहाँ एक तरफ भौतिकवादी संस्कृति में वृद्धि किया है वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं हाशिए की तरफ सरकती चली गयी हैं, जिसके कारण आने वाले समय में संघर्ष दिखाई पड़ रहा है। आज वैश्विकरण ने अमीरी एवं गरीबी की खाई को इतना बढ़ा दिया कि इसे पाटना शायद मुश्किल है। इसके दुष्परिणामों के रूप में हम देखें तो आतंकवाद, नक्सलवाद एवं नस्लीय हिंसाएं एक विध्वंसक रूप हैं।

दूसरी तरफ वैश्वीकरण ने मानव जीवन को सकारात्मक रूपों में भी प्रभावित किया है। महिलाओं के संदर्भ में हम देखें तो महिलाओं को घर की चहारदीवारी में रखा जाता था। समाज का एक अंग होने के बावजूद भी उन्हें पूरी स्वतंत्रता नहीं थी। एक छोटा सा उदाहरण संदर्भित करना चाहूंगा यदि एक पुरुष 24 घंटे से बाहर रहे तो कोई बात नहीं लेकिन यदि कोई महिला बिना बताये 24 घंटे बाहर रहे तो पुरुष समाज के लिए दुनियां का यह सबसे बड़ा अपराध है। लेकिन इधर कुछ दशकों से देखें तो इस विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन आया है। इसके लिए उत्तरदायी कारकों के रूप में वैश्वीकरण को देख सकते हैं। वैश्वीकरण ने महिलाओं की परतंत्रता की जंजीरों में हजारों वर्षों से लगे ताले को खोला है। आज महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। महिलाओं का शिक्षा का स्तर भी बढ़ा है। आज हम राजनीतिक, प्रशासनिक एवं अन्य उच्च पदों पर महिलाओं की भागीदारी देख सकते हैं। यह तो एक सिक्के का एक पक्ष है। सिक्के का दूसरा पक्ष यह भी है कि भारत की आर्थिक स्थिति तो मजबूत हुई है साथ ही साथ सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से भी भारत मजबूत हुआ है।

इस तरह प्रस्तुत पुस्तक के मूल्यांकनार्थ कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत के प्रत्येक जनमानस को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है, जिसकी गंभीर विवेचना विभिन्न शोध–पत्रों/लेखों के माध्यम से की गयी है। यह पुस्तक शोधार्थियों एवं नवीन समाज वैज्ञानिकों को इस दिशा में कार्य करने हेतु एक दृष्टि प्रदान करेगी।